तरफ अर्स अजीम की, कोई जाने ना एक नूर बिन।
पर गुझ मता न जानहीं, जो है नूरजमाल बातन।।४१ ।।

इस अक्षरब्रह्म के अतिरिक्त परमधाम की बात कोई नहीं जानता। यह अक्षरब्रह्म भी श्री राजजी महाराज के बातूनी गुप्त रहस्यों को नहीं जानते।

सो गुझ हक हादीय का, दिया खेल में बीच मोमिन।
तो दिल अर्स किया हकें, जो अर्स अजीम में इनों तन।।४२ ।।

वह गुप्त हकीकत श्री राजश्यामाजी की मोमिनों को खेल में मिल गई। इनके मूल तन परमधाम में हैं। उनके ही संसार के दिल में श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया है।

हकें अर्स की सुध सब दई, पाई हकीकत मारफत।
हक हादी रूहें खिलवत, ए बीच असल वाहेदत।।४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम की सभी सुध हकीकत और मारफत के ज्ञान से दी, जो श्री राजश्यामाजी और रूहों के मूल-मिलावा में असल तनों के बीच हुई थीं।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, हक इस्क बोले बेसक।
इस्क रब्द वाहेदत में, हक उलट हुए आसिक।।४४ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से मोमिनों को कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने वचनों से जो इश्क का दावा किया था, वही सच्चा है। परमधाम के मूल-मिलावा के इश्क रब्द में कहे अनुसार इस संसार में माशूक श्री राजजी महाराज आशिक बन गए।

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ २०६९ ॥

हक मेहेबूब के जवाब

रूहों मैं–रे तुमारा आसिक, मैं सुख सदा तुमें चाहों।
वास्ते तुमारे कई विध के, इस्क अंग उपजाओं।। १ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं, हे रूहो! मैं तुम्हारा आशिक हूं और सदा ही तुम्हारे सुख की चाहना करता हूं। तुम्हारे अंगों में इश्क उपजाने के लिए कई तरह के उपाय करता हूं।

मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल।
मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल।। २ ।।

मैं तुम्हारा आशिक हूं। यह इश्क के शब्द मैंने कुरान में लिखे। मैंने तुम्हें अपना माशूक करके लिखा। इन वचनों पर भी तुमने ध्यान नहीं दिया।

अव्वल बीच और आखिर, लिखे तीनों ठौर निसान।
ए बीतक हम तुम जानहीं, भेजी तुमको पेहेचान।। ३ ।।

कुरान में मैंने शुरू के, बीच के और आखिर के (बृज, रास और जागनी) सभी निशान लिखे हैं। यह मेरे और तुम्हारे बीच बीती बातें हैं। तुम्हें याद कराने के लिए कुरान में लिखीं।

Nijanand App

दो बेर दुनियां नई कर, किन दो बेर डुबाई जहान।
तुमको लैलत कदर में, दो बेर किन बचाए तोफान।।४।।

किसने दो बार दुनियां को डुबोकर (महाप्रलय) दुबारा नई दुनियां बनाई? तुम्हें लैल तुल कदर की इस रात में महाप्रलय में से दो बार किसने बचाया? एक बार हूद-तूफान में गोवर्धन पर्वत के तले बचाया। दूसरी बार योगमाया के ब्रह्माण्ड में ले जाकर सुरक्षित किया।

फेर तीसरी बेर दुनी कर, जिनमें होसी फजर।
सब विध बेसक करके, तुमें खेल देखाया और नजर।।५।।

अब तीसरी बार फिर से दुनियां नई बनाई, जिसमें तारतम ज्ञान से अज्ञानता का अन्धकार मिटाकर ज्ञान का सवेरा होगा। हर तरह से तुम्हारे संशय मिटाकर तुम्हें जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर आत्मदृष्टि से संसार का खेल दिखाया।

तुम जो अरवाहें अर्स की, साथ हक जात निसबत।
ए जो दोस्ती हक हमेसगी, बीच खिलवत के वाहेदत।।६।।

तुम परमधाम की रूहें हो। तुम मेरी ही अंगना हो। मेरी तुमसे मूल-मिलावा (परमधाम) में अनादि से दोस्ती है।

कोई तरफ न जाने अर्स की, तो मुझे जाने क्यों कर।
नूरजलाल नूर मकाने, एक इने मेरे तरफ की खबर।।७।।

इस संसार में किसी को भी परमधाम की खबर नहीं है, तो मुझे कोई कैसे जानता? अक्षरधाम के अक्षरब्रह्म को ही केवल मेरी खबर थी।

दूजा तरफ तो जानहीं, कोई और ठौर बका होए।
नाहीं क्यों जाने तरफ है की, किन ठौर से तरफ ले कोए।।८।।

यदि कोई और दूसरा अखण्ड ठिकाना होता, तो उसकी जानकारी होती। संसार, जो कुछ है ही नहीं, वह अखण्ड ठिकाने को कैसे जान पाए?

खेल कई कोट एक पल में, देख उड़ावे पैदा कर।
ऐसी कुदरत नूरजलालपे, नूर-मकान ऐसा कादर।।९।।

अक्षरब्रह्म की कुदरत ऐसी शक्तिशाली है कि एक पल में ऐसे कई करोड़ों ब्रह्माण्ड पैदा कर मिटा देती है। ऐसी शक्ति वाला अक्षरधाम है।

ए बातून जो मेरे अर्स का, सो सुध नूर को भी नाहें।
मेरी गुझ अर्स जो खिलवत, तुम इन खिलवत के माहें।।१०।।

मेरे परमधाम के रंग महल की बातूनी (अन्दरूनी) बातों की खबर अक्षरब्रह्म को भी नहीं है। रंग महल के मूल-मिलावा की गुझ (गोपनीय) बातें केवल तुम ही जानते हो, क्योंकि तुम मूल-मिलावा में बैठे हो।

दोस्ती हक हमेसगी, क्यों भुलाए दई मोमिन।
तुम जो रूहें अर्स की, मेरे अर्स के तन।।११।।

हे मोमिनो! मेरी तुमसे अनादि की दोस्ती है। उसे तुमने क्यों भुला दिया? तुम मेरी परमधाम की रूहें हो और मेरे ही परमधाम के अंग हो।

Nijanand App

अंग हादी मेरे नूर से, तुम रूहें अंग हादी नूर।
तो अर्स कह्या तुम दिल को, जो रूहें वाहिद तन हजूर।। १२ ।।

श्यामा महारानी मेरे अंग का नूर हैं। श्यामा महारानी के अंग के नूर से तुम सब हो। तुम एक तन एक दिल होकर मूल-मिलावा में बैठी हो, इसलिए मैंने तुम्हारे दिल को अपना अर्श कहा है।

और भी लिख्या महंमद को, आसमान से तेहेतसरा।
ए बहुविध बेहेरुल हैवान, जल सिर लग कुफर भर्‌या।। १३ ।।

कुरान में यह भी मैंने लिखा है कि पाताल से आसमान तक बहुत तरह के जानवरों का सागर है, जिनके सिर तक कुफ्र ही कुफ्र भरा है।

कई विध के माहें हैवान, कई जिन देव इन्सान।
बीच मरजिया होए काढ़ी सीप, मिने मोती महंमद पेहेचान।। १४ ।।

इस तरह कई तरह के जानवरों में कई प्रेत हैं (भूत हैं) कई देव हैं, कई इन्सान हैं। ऐसे भवसागर में से मैंने मरजिया (समुद्र में गोता लगाने वाला) बनकर मोती की सीप को निकाला और जिसमें से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी (इन्द्रावती की आत्मा) को पहचान कर निकाला।

सो तुम अजूं न समझे, मैं कर लिख्या मासूक।
ए सुकन सुन तुम मोमिनों, हाए हाए हुए नहीं टूक टूक।। १५ ।।

तुम अभी तक यह नहीं समझे कि मैंने तुमको माशूक क्यों लिखा? इन वचनों को सुनकर भी हे मोमिनो! हाय! हाय! तुम्हारे टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

बसरी मलकी हकी लिखी, आई महंमद तीन सूरत।
एक अव्वल दो आखिर, सो वास्ते तुम उमत।। १६ ।।

बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की तीन सूरतें आएंगी, ऐसा कुरान में लिखा। एक बसरी सूरत पहले आएगी और दो मलकी और हकी सूरतें बाद में तुम रूहों के वास्ते ही आएंगी।

बंदगी मजाजी और हकीकी, ए जो कहियां जुदियां दोए।
एक फरज दूजा इस्क, क्यों न देख्या बेवरा सोए।। १७ ।।

खुदा की बन्दगी दो तरह की कुरान में कही है। एक झूठी बन्दगी और दूसरी सच्ची। झूठी बन्दगी शरीयत (कर्मकाण्ड) की फर्ज बन्दगी कहलाती है और दूसरी हकी बन्दगी इश्क की कहलाती है।

ए जो फरज मजाजी बंदगी, बीच नासूत हक से दूर।
होए मासूक बंदगी अर्स में, कही बका हक हजूर।। १८ ।।

शरीयत की (कर्मकाण्ड की) झूठी बन्दगी फर्ज की बन्दगी होती है। वह इस संसार में होती है और हक से दूर करती है। हकीकत की बन्दगी माशूक मोमिन परमधाम (रंग महल) की करते हैं, इसलिए वह अखण्ड की हजूरी बन्दगी होती है।

दोस्ती कही हक की, तिन में समनून पातसाह।
पातसाह कौन होए बिना मासूक, देखो इस्म कुरान खुलासा।। १९ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा के दोस्तों में से समनून बादशाह होगा। अब हे मोमिनो! विचार करके देखो कि तुम्हारे बीच समनून बादशाह दोस्ती निभाने वाला कौन है? अब समनून नाम को देखो। वह मैं ही तुम्हारा माशूक हूं। यह कुरान का खुलासा है।

Nijanand App

अव्वल दोस्ती हक की, लिखी माहें फुरमान।
पीछे दोस्ती बंदन की, क्यों करी ना पेहेचान।। २० ।।

कुरान में लिखा है कि दोस्ती पहले श्री राजजी महाराज की होगी। पीछे उनके बन्दे रूह मोमिनों की होगी। इस बात को तुमने क्यों नहीं पहचाना?

मैं कदीम लिखी मेरी दोस्ती, ए किए न सहूर सुकन।
तुमको बेसक किए इलम सों, हाए हाए अजूं याद न आवे रूहन।। २१ ।।

कुरान में मैंने खुदा और मोमिनों के बीच अनादि काल की दोस्ती लिखी है। इन वचनों का विचार किसी ने नहीं किया। अब तुमको हमने जागृत बुद्धि की अखण्ड तारतम वाणी से संशय रहित कर दिया। हाय! हाय! रूहो! तुमको फिर भी याद नहीं आती?

दोस्त मेरे मोमिन, और मासूक हादी बेसक।
तो नाम लिख्या अपना, मैं तुमारा आसिक।। २२ ।।

मैंने कुरान में मोमिनों को अनादि का दोस्त और श्री श्यामाजी को माशूक करके लिखा तथा अपना नाम आशिक लिखा है।

मैं लिख्या है तुम को, जो एक करो मोहे साद।
तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुमें याद।। २३ ।।

मैंने कुरान में तुमको लिखा है कि यदि तुम केवल एक मुझे ही (सबको छोड़कर) रिझा लो, तो मैं तुम्हारे आगे दस बार 'जी-जी' करके तुम्हें याद करूंगा।

और भी लिख्या मैं तुमको, मैं करत तुमारी जिकर।
मेरी तुम पीछे करत हो, क्यों कर ना देखी फिकर।। २४ ।।

मैंने कुरान में यह भी लिखा है कि खुदा को केवल अपनी रूहों की ही फिक्र है, अर्थात् मुझे सदा आपका ही ध्यान है। तुम मेरी बाद में फिक्र करते हो। इस बात को तुमने ध्यान से कुरान में नहीं देखा।

ए जो मैं लिखी बुजरकियां, सो है कोई तुम बिन।
जित भेजों मासूक अपना, जो चीन्हे मेरे सुकन।। २५ ।।

मैंने जो कुरान में तुम्हारी महिमा गाई है, तुम उसे विचार कर देखो कि तुम्हारे बिना कोई और है, जो मेरे वचनों को पहचाने, जिसके लिए मैंने अपने माशूक श्री श्यामाजी महारानी को भेजा।

मैं किन पर भेजों इसारतें, पढ़ी जाएं न रमूजें किन।
तुम जानत हो कोई दूसरा, है बिना अर्स रूहन।। २६ ।।

मैंने कुरान में जो इशारतें लिखी हैं, उन्हें दूसरा कौन समझ सकता है? तुम जानते हो कि परमधाम में रूहों के बिना और कौन दूसरा है?

ए जो औलाद आदम की, सब पूजत हैं हवा।
सो जाहेर लिख्या फुरमान में, क्या तुम पाया न खुलासा।। २७ ।।

यह सारी दुनियां आदम की औलाद है। सब निराकार को पूजने वाले हैं। यह बात कुरान में जाहिर लिखी है, तो क्या तुमने इसको नहीं समझा?

Nijanand App

ए जो दुनियां खेल कबूतर, तित भी दिए कुलफ दिल परं।
पावे हकीकत कलाम अल्लाह की, सो खुले ना लदुन्नी बिगर।। २८ ।।

यह दुनियां खेल के कबूतर के समान झूठी है। ऊपर से इनके दिलों पर ताले लगे हैं। कुरान की हकीकत को जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना नहीं जाना जा सकता।

सो तो दिया मैं तुम को, सो खुले ना बिना तुम।
जो मेरी सुध द्यो औरों को, तित चले तुमारा हुकम।। २९ ।।

वह जागृत बुद्धि मैंने तुमको दी है, इसलिए कुरान के छिपे भेदों को और कोई नहीं खोल सकता। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान से दुनियां को मेरी पहचान कराओ, तो फिर हुकम तुम्हारा चलेगा।

ए सुकन हकें अव्वल कहे, अर्स में महंमद को।
केतेक जाहेर कीजियो, बाकी गुझ रखियो दिल मों।। ३० ।।

यह बातें परमधाम में रसूल साहब को शुरू में ही मैंने कही थीं और आदेश दिया था कि इनमें से कुछ जाहिर करना और कुछ गुप्त रखना और बाकी दिल में रखना।

सरा सुकन कराए जाहेर, गुझ रखे बका बातन।
मूंद्या रख्या द्वार मारफत का, वास्ते पेहेचान अर्स रूहन।। ३१ ।।

शरीयत के वचन कुरान में जाहिर कराए। अखण्ड घर की हकीकत की बातें गुप्त रखीं। मारफत के ज्ञान के दरवाजे तो बन्द ही रखे, ताकि जब परमधाम की रूहें आएंगी तो वही इनकी पहचान कराएंगी।

पट बका किने न खोलिया, कई अवतार हुए तीर्थंकर।
हक इलम बिना क्योंए ना खुले, कई लाखों हुए पैगंमर।। ३२ ।।

कई अवतारी पुरुष और तीर्थंकर हो गए, पर अखण्ड दरवाजे आज तक किसी ने नहीं खोले। लाखों पैगम्बर और भी हो गये हैं, पर जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना कोई भी इसे नहीं खोल सका।

अर्स बका पट खोलसी, आखिर बखत मोमिन।
साहेब जमाने की मेहेर से, दिन करसी बका रोसन।। ३३ ।।

आखिरत के समय मोमिन आएंगे और वही अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे। वह आखिरी जमाने के खावंद इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी की मेहर से अज्ञानता का परदा हटाकर अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे।

राह देखाई तौहीद की, महंमद चढ़ उतर।
सो ए तुमारे वास्ते, क्यों न देखो सहूर कर।। ३४ ।।

रसूल साहब ने परमधाम जाने का रास्ता बताया। यह सब तुम्हारे वास्ते ही किया है। इसे तुम विचारकर क्यों नहीं देखते हो?

और जो पैदा जुलमत से, सो तुम जानत हो सब।
ए क्यों छोड़ें हवा को, जिनों असल देख्या एही रब।। ३५ ।।

जो दुनियां निराकार से पैदा है, इसकी हकीकत तुम सब जानते हो। जिन्होंने निराकार को ही खुदा मान लिया है, वह निराकार को कैसे छोड़ सकते हैं?

Nijanand App

इलम लदुन्नी तुमपे, जिन पेहेले पाई खबर।
और न कोई वाहेदत बिना, तो इत आवेंगे क्यों कर।। ३६ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारे पास ही जागृत बुद्धि का ज्ञान है। अखण्ड परमधाम की खबर तुमको ही सबसे पहले मिली। तुम्हारे बिना मूल-मिलावा में दूसरा आ ही कैसे सकता है?

मेयराज हुआ महंमद पर, सो कौल अर्स बका के।
सो साहेदी के दो एक सुकन, बीच मुहककों पसरे।। ३७ ।।

रसूल साहब को मेयराज (दर्शन) हुआ, उन्होंने कुरान में आकर परमधाम के वायदे लिखे। उन वायदों के दो एक वचन रसूल के अनुयाइयों में फैले।

बका सुकन सब मेयराज के, जाहेर किए सब में।
सब अर्स बका मुख बोलहीं, और सुकन ना गिरो से।। ३८ ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की सब बातें संसार में आकर जाहिर कीं। अब मोमिनों की जमात अखण्ड परमधाम के अतिरिक्त मुख से और कोई शब्द नहीं बोलेंगे।

सो खासी गिरो महंमद की, तामें ए बात होत निस दिन।
मुख छोटे बड़े एही सुकन, और बोले न बका बिन।। ३९ ।।

अब आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की ब्रह्मसृष्टियों की जमात सुन्दरसाथ में रात-दिन इसी की चर्चा होती है। छोटे-बड़े सभी के मुख से अखण्ड परमधाम के अतिरिक्त और कोई शब्द नहीं निकलते।

बका सब्द मुख सब के, सो इलम सब में गया पसर।
सब्द फना को न देवे पैठने, ऐसा किया बखत रूहों आखिर।। ४० ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान सबके अन्दर फैल गया है, इसलिए परमधाम के अतिरिक्त और कोई चर्चा ही नहीं होती। आखिर वक्त में ब्रह्मसृष्टियों ने कोई झूठा ज्ञान अपने अन्दर नहीं आने दिया।

सब्द फना गए रात में, किया बका सब्दों फजर।
कुफर अंधेरी उड़ गई, बोल पाइए न बका बिगर।। ४१ ।।

संसार के अज्ञानता के सभी ज्ञान अन्धकार में छिप गए। परमधाम की अखण्ड जागृत बुद्धि के ज्ञान ने सवेरा कर दिया। झूठ और फरेब सब समाप्त हो गये। अब अखण्ड परमधाम की चर्चा के सिवाय कुछ और सुनाई नहीं देता।

ए कह्या था अव्वल, रसूलें इत आए।
सो रूहें रूहअल्ला इमाम, फजर करी बनाए।। ४२ ।।

यह भी रसूल साहब ने पहले से आकर कहा था, तो उनके कहे अनुसार ही रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने आकर ज्ञान का सवेरा किया।

अव्वल कह्या इलम ल्यावसी, आया तिनसे ज्यादा बेसक।
सो नीके लिया मोमिनों, पाई अर्स मारफत हक।। ४३ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि जागृत बुद्धि का ज्ञान श्री श्यामा महारानी लाएंगी। उससे भी ज्यादा ज्ञान (कुलजम सरूप) श्री प्राणनाथजी लाए। मोमिन इसे अच्छी तरह से समझेंगे और परमधाम की मारफत के ज्ञान की पहचान इनको मिलेगी।

Nijanand App

ए इलम लिए ऐसा होत है, आप बेसक होत हैयात।
और कायम हुए देखे सबको, पावे दीदार बातून हक जात।। ४४ ।।

इस जागृत बुद्धि के ज्ञान को ग्रहण करने से आदमी स्वयं निःसंदेह होता है। अखण्ड हो जाता है। फिर सारी दुनियां की अखण्ड होने की बात को समझता है। हकजात मोमिनों की पहचान कर दर्शन करता है।

देखी अपनी भिस्त आप नजरों, जो होसी बका परवान।
सब करम काटे हक इलमसों, ए देखी बेसक मेहेर सुभान।। ४५ ।।

मोमिनों के सारे जीव अखण्ड होंगे। वह अपनी नजर से अपनी बहिश्त देखेंगे। श्री राजजी महाराज की मेहर से जागृत बुद्धि के ज्ञान से उनके सभी संसार के कर्म बन्धन कट जाएंगे।

हक तरफ जानें नूर अछर, और दूजा न जाने कोए।
पर बातून सुध तिन को नहीं, हक इलम देखावे सोए।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज की पहचान अक्षरब्रह्म को है और दूसरा कोई नहीं जानता, परन्तु बातूनी बातों की सुध अक्षरब्रह्म को भी नहीं थी, जो अब जागृत बुद्धि का ज्ञान दे रहा है।

कई सुख कायम इन इलम में, आवें न माहें हिसाब।
हक सुराही बका खिलवत में, ए इलम पिलावे सराब।। ४७ ।।

इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी में कई अखण्ड सुख बेशुमार हैं, बेहिसाब हैं। परमधाम में श्री राजजी महाराज के अखण्ड मूल-मिलावा में दिल की सुराही से इश्क के प्याले शराब (इश्क) पिलाते हैं।

सो मैं भेज्या तुमें मोमिनों, देखो पोहोंच्या इस्क चौदे तबक।
ऐसा इस्क मेरा तुमसों, इनमें पाइए न जरा सक।। ४८ ।।

हे मोमिनो! वह इश्क मैंने तुम्हारे वास्ते चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में भेजा है। मेरा तुमसे इतना अधिक प्यार है कि तुम्हें इसमें जरा भी संशय नहीं आएगा।

यों किया वास्ते ईमान के, आवे आखिर रूहन।
सो आए हुआ सबों रोसन, जाहेर बका अर्स दिन।। ४९ ।।

आखिर के समय रूहों को ईमान आए, इसलिए यह किया है। अब वह इलम और इश्क सबमें जाहिर हो गया। अखण्ड परमधाम की पहचान सबको होगी।

अव्वल से बीच अब लग, तरफ पाई न बका की।
महंमद एता ही बोलिया, जासों ईसा पावें साहेदी।। ५० ।।

आदि से आज तक परमधाम की खबर किसी को नहीं थी। रसूल साहब ने भी इतना ही बताया, जिससे श्री श्यामा महारानी को गवाही मिल जाए।

सो लई रूहअल्ला साहेदी, दूजी साहेदी आप दई।
त्यों करी इमामें जाहेर, ज्यों सब में रोसन भई।। ५१ ।।

श्री श्यामा महारानी ने कुरान की गवाही को लिया और दूसरे स्वयं अपनी भी गवाही दी। फिर उसी तरह से इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने जैसे गवाहियां लिखी थीं, सारी हकीकत को जाहिर किया।

Nijanand App

लई ईसे महंमद की साहेदी, बका जाहेर किया इमाम।
हक हादी रूहन की, करी खिलवत जाहेर तमाम।।५२।।

रसूल साहब और श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) की गवाही लेकर इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम को जाहिर किया। उन्होंने श्री राजश्यामाजी और रूहों के मूल-मिलावा की सभी बातों को भी जाहिर किया।

इन आखिर दिनों इमाम, बानी बोले न बका बिन।
सो सिर ले सुकन गिरोहने, कायम किए सबन।।५३।।

इस आखिरत के समय में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी अखण्ड परमधाम की वाणी के बिना और कुछ नहीं बोलते हैं। उनकी वाणी को ब्रह्मसृष्टियों ने सिर चढ़ाया और सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड किया।

दुनियां चौदे तबक के, दिए इलमें मुरदे उठाए।
ताए मौत न होवे कबहूं, लिए बका मिने बैठाए।।५४।।

इनकी जागृत बुद्धि की वाणी से चौदह लोक के मुर्दे जिन्दा हो गए। अब वह कभी नहीं मरेंगे। उनको अखण्ड मुक्ति मिल गई है।

बड़ाई इन इलम की, क्यों इन मुख करों सिफत।
सो आया तुममें मोमिनों, जाको सब्द न कोई पोहोंचत।।५५।।

इस जागृत बुद्धि की वाणी की महिमा इस मुख से कैसे करें? मोमिनो! ऐसा अदभुत ज्ञान तुमको मिल गया है जिसकी महिमा करने के लिए संसार में कोई शब्द ही नहीं है।

और सराब मेरी सुराही का, सो रख्या था मोहोर कर।
सो खोलने बोहोतों किया, पर क्यों खोलें कबूतर।।५६।।

श्री राजजी महाराज कह रहे हैं कि मेरे दिल की सुराही में शराब (इश्क) मोहर बन्द कर रखी थी। जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न बहुतों ने किया, पर यह संसार के झूठे जीव जो खेल के कबूतर की तरह हैं, कैसे पा सकते हैं?

सो रख्या तुमारे वास्ते, सो तुमहीं ल्यो दिल धर।
लिखे फूल प्याले तुम ताले, अछूत पियो भर भर।।५७।।

हे मोमिनो! इस इश्क को मैंने तुम्हारे वास्ते ही सुरक्षित रखा है। अब तुम जी भर के पियो। यह इश्क के प्याले तुम्हारे ही नसीब में लिखे हैं। आज तक कोई इन्हें छू नहीं सका। अब तुम इन प्यालों में धनी के इश्क को पीयो।

सराब मेरी सुराही का, सो रूहों मस्ती देवे पूरन।
दे इलम लदुन्नी लज्जत, हक बका अर्स तन।।५८।।

मेरे दिल की सुराही का इश्क रूहों को पूरी मस्ती देगा। यह अखण्ड वाणी अखण्ड परमधाम के तनों की और श्री राजजी महाराज की लज्जत भी देगी।

Nijanand App

जो बैठे हैं होए पहाड़ ज्यों, सो उड़ाए असराफीलें सूर।
सूरें खोले मगज मुसाफ के, हुए जाहेर तजल्ला नूर।।५९।।

संसार में बड़े-बड़े धर्मों के ठेकेदार, आचार्य, गादीपति, इत्यादि पहाड़ बने बैठे थे। असराफील ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से इन्हें उड़ा दिया। अब असराफील की वाणी ने कुरान के सारे रहस्य खोल दिए। परमधाम की पहचान सबको हो गई।

तब उड़े काफर हुते जो पहाड़ से, हुए मोमिनों बान चूर।
लगे और बान अर्स इलमें, तिन हुए कायम नूर हजूर।।६०।।

तब संसार के धर्माचार्य, गादीपति जो पहाड़ों के समान काफिर बनकर बैठे थे, वह रूहों की वाणी से चकनाचूर हो जाएंगे। परमधाम की तारतम वाणी के बाण उनको चुभेंगे और फिर वाणी के तीरों से घायल होकर अक्षरब्रह्म की नजर में बहिश्तों में अखण्ड हो जाएंगे।

जो लिखी सिफतें फुरमान में, सो सब तुम अर्स रूहन।
और सिफत तो होवहीं, जो कोई होवे वाहेदत बिन।।६१।।

कुरान में जो महिमा गाई गई है, वह सब परमधाम की रूहों के वास्ते है। यह सिफत तो तुम्हारे सिवाय और किसी की तब होती, यदि तुम्हारे अतिरिक्त कोई और होता।

चौदे तबक पढ़ पढ़ गए, किन खोली नहीं किताब।
इसारतें रमूजें क्यों खुलें, देखो किन खोलाई दे खिताब।।६२।।

चौदह तबकों के लोग पढ़ते ही रह गए, परन्तु कुरान के रहस्य किसी ने नहीं खोले। फिर वह इशारतें और रमूजें खुल भी कैसे सकती थीं? अब तुम विचार करके देखो कि किसने तुमको अपनी साहेबी देकर कुरान के रहस्य खुलवाए।

मुकता हरफ तुम वास्ते, अखत्यार दिया हादी पर।
जो चौदे तबक दुनी मिले, तो माएने होए न हादी बिगर।।६३।।

अलिफ-लाम-मीम के हरफे मुक्तआत तुम्हारे वास्ते ही हमने लिखे, जिसको खोलने का अधिकार श्री प्राणनाथजी को दिया। उनके अतिरिक्त चौदह लोकों की दुनियां में कोई नहीं खोल सकता।

जाहेर खिताब हादी पर, दिया वास्ते मोमिन।
सो मुकता हरफ के माएने, होए न लदुन्नी बिन।।६४।।

मोमिनों के वास्ते ही इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी को खोलने का खिताब दिया है। इन हरफे मुक्तआत के अर्थ तारतम वाणी के बिना नहीं खुल सकते।

सो दिया लदुन्नी तुम को, तुम खोलो मुकता हरफ।
मैं अर्स किया दिल मोमिन, जाकी पाई न किन तरफ।।६५।।

अब वह जागृत बुद्धि का ज्ञान तुमको दे दिया। अब तुम हरफे मुक्तआत के अर्थ खोलो। मैंने मोमिनों के दिल को अर्श किया, जिसकी खबर आज दिन तक किसी को नहीं हुई।

ए जाहेर तुमारा माजजा, पढ़े हरफ कर पढ़ते थे।
ए भेद हक हादी रूहों, बीच खिलवत का जे।।६६।।

यह जाहिर में तुम्हारी पहचान कराने वाला चमत्कार है। इल्मी लोग इन हरफों को पढ़ते तो थे, पर इन हरफे मुक्तआत में श्री राजश्यामाजी और रूहें तथा मूल-मिलावा की हकीकत है, यह नहीं जानते थे।

Nijanand App

सो रख्या तुमारे वास्ते, ए खोलो तुम मिल।
दुनी पावे ना इन तरफ को, सो बीच अर्स तुमारे दिल।। ६७ ।।

हे मोमिनो! यह सब तुम्हारे वास्ते सुरक्षित रखे थे। अब तुम सब मिलकर इनके अर्थ खोलो। दुनियां वाले तो इन्हें समझ ही नहीं सकते। वह तुम्हारे अर्श दिल में हैं।

हक बका मता जाहेर किया, पर ए समझ्या नाहीं कोए।
कह्या हरफै के बयान में, बिना ताले न पेहेचान होए।। ६८ ।।

श्री राजजी महाराज का अखण्ड ज्ञान जाहिर कर दिया, परन्तु कोई समझ नहीं सका। इन हरफों की पहचान बिना मोमिनों के नहीं हो सकती।

ए बयान पुकारे जाहेर, इत पोहोंचे ना दुनी सहूर।
ए हादी जानें या अर्स रूहें, हक खिलवत का मजकूर।। ६९ ।।

कुरान में साफ लिखा है कि दुनियां में सोचने की क्षमता है ही नहीं। इसे श्री प्राणनाथजी या परमधाम की रूहें ही जानती हैं, क्योंकि इनमें मूल-मिलावा की हकीकत है।

तरफ भी किन पाई नहीं, पावे तो जो दूसरा होए।
तुम तो बीच वाहेदत के, और जरा न कित काहूं कोए।। ७० ।।

दुनियां में तो किसी ने अखण्ड की सुध ही नहीं पाई। इस दुनियां में कोई यदि अखण्ड का होता तो उसे अखण्ड की जानकारी होती। हे मोमिनो! तुम मूल-मिलावा के हो। जहां तुम्हारे अतिरिक्त और कोई है ही नहीं।

तुम जानो हम जाहेर, होएं जुदे हक बिगर।
हम तुम अर्स में एक तन, तुम जुदे होए सको क्यों कर।। ७१ ।।

हे मोमिनो! तुमने समझा था कि हम दुनियां में अपने इश्क के बल से श्री राजजी महाराज के बिना ही जाहिर हो जाएंगे। हम जब परमधाम में एक तन हैं, तो तुम हमसे अलग कैसे हो सकते हो?

दुनी जुदे तुमें तो जानहीं, जो तुम जुदे हो मुझ सें।
हम तुम होसी भेले जाहेर, अपन वाहेदत हैं अर्स में।। ७२ ।।

यदि तुम मुझसे अलग हो तो दुनियां तुमको अलग समझे। मैं और तुम सब संसार में एक साथ जाहिर होंगे, क्योंकि परमधाम में हम एक तन हैं।

मैं तेहेत-कबाए तुमको रखे, कोई जाने ना मुझ बिन।
तुमको तब सब देखसी, होसी जाहेर बका अर्स दिन।। ७३ ।।

मैंने तुमको अपने दामन के नीचे मूल-मिलावा में छिपाकर रखा, जहां मेरे सिवाय और कोई नहीं था। अब अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर होगा, तब सब दुनियां वाले तुमको देखेंगे और तब दुनियां को अखण्ड परमधाम की पहचान होगी।

जब पेहेले मोको सब जानसी, तब होसी तुमारी पेहेचान।
हम तुम अर्स जाहेर हुए, दुनी कायम होसी निदान।। ७४ ।।

दुनियां वाले पहले मुझे पहचानेंगे। बाद में तुम्हारी पहचान होगी। हम, तुम और परमधाम जब जाहिर हो जाएंगे, तब दुनियां को निश्चित रूप से अखण्ड मुक्ति मिल जाएगी।

Nijanand App

मैं तुमारा मासूक, तुम मेरे आसिक।
और तुम मासूक मैं आसिक, ए मैं पुकारया माहें खलक।।७५।।

हे रूहो! परमधाम में मैं तुम्हारा माशूक हूं और तुम मेरे आशिक हो। अब संसार में आकर मैंने जाहिर किया कि तुम मेरे माशूक हो और मैं तुम्हारा आशिक हूं।

है को नाहीं कीजिए, सो तो कबूं न होए।
नाहीं को है कीजिए, सो कर न सके कोए।।७६।।

अखण्ड को यदि नष्ट करना चाहें तो कभी भी नहीं कर सकते, क्योंकि यह नष्ट हो ही नहीं सकता। जो नाशवान है उसे अखण्ड करना है। यह भी काम मेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं कर सकता।

हक आप काजी होए बैठसी, सो क्या सहूर न किए सुकन।
ला सरीक न बैठे किन में, ना कोई वाहेदत बिन।।७७।।

मैंने कुरान में लिखा है कि मैं स्वयं (खुदा) न्यायाधीश बनकर बैठूंगा। क्या इन वचनों पर तुमने विचार नहीं किया? मैं अपनी रूहों के बिना संसारी नाशवान जीव के तन में नहीं बैठता।

सहूर बिना सब रेहे गया, और सहूर लदुन्नी माहें।
सो तो सूरत हकीय पे, और वाहेदत बिना कोई नाहें।।७८।।

इसका तुमने विचार नहीं किया। विचार जागृत बुद्धि के बिना हो ही नहीं सकता, जो हकी सूरत श्री प्राणनाथजी और रूहों के बिना कहीं नहीं है।

चौदे तबक इतना नहीं, जाके कीजे टूक दोए।
बिना वाहेदत कछूए ना रख्या, क्यों ना देख्या लिख्या सोए।।७९।।

चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड तो इतना छोटा है कि जिसके दो टुकड़े भी नहीं किए जा सकते। मोमिनों के बिना और कुछ है ही नहीं। यह मैंने कुरान में लिखा है। वह तुमने क्यों नहीं देखा?

दई कुंजी सनाखत तुम को, मैं भेज्या मासूक रसूल।
बेसक करियां दे इलम, सो भी गैयां तुम भूल।।८०।।

मैंने तारतम ज्ञान की कुंजी देकर श्यामा महारानी को तुम्हारे पास भेजा, ताकि तुम मेरी पहचान कर सको। उन्होंने तारतम वाणी से तुम्हें संशय रहित भी किया, फिर भी तुम मुझे भूल गए।

तुम बैठे जिमी नासूती, आड़ा मलकूत जबरूत।
सात आसमान हवा बीच में, मैं बैठा ऊपर लाहूत।।८१।।

तुम मृत्युलोक में जाकर बैठे हो। मेरे बीच बैकुण्ठ और अक्षरधाम का परदा है। निराकार के बीच भी सात लोक हैं। मैं इन सबसे परे परमधाम में बैठा हूं।

सो दूर राह आसमान लग, बीच ऐसे सात आसमान।
सो भी राह फरिस्तन की, ऊपर जुलमत ला मकान।।८२।।

दुनियां के मृत्युलोक से बैकुण्ठ सात आसमान दूर है। इस रास्ते पर देवी-देवता ही चलते हैं। इसके ऊपर मोह तत्व निराकार है।

Nijanand App

नूर–मकान हुआ तिन पर, राह चले ना नूर पर।
जित पर जले जबराईल, तित वजूद आदम पोहोंचे क्यों कर।। ८३ ।।

अक्षरधाम इसके ऊपर है, जिसके आगे कोई चल ही नहीं पाता, जहां जबराईल नहीं पहुंच सका। वह कहता है कि मेरे पर जलते हैं। वहां आदमी का तन कैसे पहुंच सकता है।

तित पोहोंच्या मेरा मासूक, कई गुझ बातें करी हजूर।
सो फिर्‌या तुम रूहों वास्ते, आए जाहेर करी मजकूर।। ८४ ।।

वहां परमधाम में मेरे माशूक रसूल साहब पहुंचे और हमने आमने-सामने कई गुझ बातें कीं। इन बातों को तुम्हारे वास्ते जाहिर करने के लिए रसूल साहब संसार में लौट गए।

मैं तुम पे भेजी रूह अपनी, अपन एते पड़े थे बीच दूर।
मैं इलम भेज्या बेसक, तुमें दम में लिए हजूर।। ८५ ।।

मैंने तुम्हारे पास अपनी श्यामा महारानी को भेजा, क्योंकि हम बहुत दूर हो गए थे। मैंने जागृत बुद्धि का इलम भेजकर तुम्हारे संशय मिटाए और एक पल में तुम्हें अपने सामने ले लिया।

राह सेहेरग सें देखाई नजीक, दई हादिएं हकीकत।
पुल–सरात सें फिराए के, पोहोंचाए अर्स वाहेदत।। ८६ ।।

इतनी लम्बी दूरी भी सेहेरग से नजदीक कर दी। ऐसा हकीकत का ज्ञान श्री प्राणनाथजी ने दिया जिन्होंने तुम्हें कर्मकाण्ड के बन्धनों से छुड़ाकर अखण्ड परमधाम में पहुंचा दिया।

ऐसे परदेस में बैठाए के, इन बिध लिखी गुहाए।
इन धनी की गुहाई ले ले, हाए हाए उड़त ना अरवाए।। ८७ ।।

तुम्हें परदेश में बिठाकर इस तरह की गवाहियां लिखीं। फिर भी तुम धनी की गवाही ले-लेकर अपने तन को क्यों नहीं छोड़ते?

मैं साख देवाई दोऊ हादियों पे, सो तुमें मिले सब निसान।
अब तो बोले सब कागद, योंही बोली सब जहान।। ८८ ।।

मैंने रसूल साहब से और श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) से गवाहियां दिलवाईं, जिनसे तुम्हें अपने घर की सब पहचान हो गई। अब सब धर्मग्रन्थों के भेद खुल गए हैं और सब दुनियां जान गई है।

अब पांचों तत्व पुकारहीं, आई रोड़ें बीच आवाज।
सो सब किए तुम कायम, वास्ते तुमारे राज।। ८९ ।।

अब पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पांचों तत्व पुकार रहे हैं और रसूल साहब की कब्र से गिरे मीनारों की ईंटों से भी आवाज आई है। अब ऐसे मिटने वाले संसार को अपनी साहेबी के वास्ते तुमने अखण्ड किया।

इस्क सबों में अति बड़ा, बका भोम चेतन।
दायम नजर तले नूर के, पेहेचान सबों पूरन।। ९० ।।

परमधाम की सब भूमि अखण्ड और चेतन है, पर वहां इश्क सबसे बड़ा है। अब अक्षर की नजर में अखण्ड होने पर सभी को पूरी पहचान हो गई।

Nijanand App

सो ए करें तुमारी बंदगी, एही इनों जिकर।
इनों सिर हक एक तुम हीं, और कोई ना वाहेदत बिगर।। ९१ ।।

संसार के सब जीव जो अखण्ड होंगे। वह सब तुम्हारी ही लीला की बातें करेंगे, क्योंकि उनको अखण्ड मुक्ति के देने वाले एक तुम ही खुदा हो, इसलिए तुम्हारे बिना और वह कुछ नहीं बोलेंगे।

ए कायम सब आगे ही किए, तुम हादी रूहों वास्ते।
जो देखो अन्दर विचार के, तो रूह साहेदी देवे ए।। ९२ ।।

यह श्री श्यामाजी महारानी और तुम रूहों के आने के कारण ही इन सब जीवों के लिए अखण्ड बहिश्तें कायम कर दी हैं। यदि दिल में विचार करके देखोगे तो तुम्हारी आत्मा भी इस बात की गवाही देगी।

जिन हरबराओ मोमिनों, हुकम करत आपे काम।
खोल देखो आंखें रूह की, जिन देखो दृष्ट चाम।। ९३ ।।

हे मोमिनो! अब तुम किसी काम के लिए जल्दबाजी मत करो। हुकम स्वयं ही सब कुछ काम कर रहा है। तुम अपनी आत्मदृष्टि से देखो। शरीर की नजर से मत देखो।

राज रोज रूहन का, जब पोहोंच्या इत आए।
तखत बैठे साह कहावते, देखो क्यों डारे उलटाए।। ९४ ।।

रूहों के जाहिर होने का जब समय आ गया तो दिल्ली के सिंहासन पर बैठे औरंगजेब बादशाह जो अपने को आलमगीर (दुनियां का खुदा) समझता था, देखो किनके वास्ते किस तरह से उसे तख्त से नीचे पटक दिया।

पैगाम दिए तुम जिन को, जो कहावते थे सुलतान।
सो पटके उसी हुकमें, जिन फेर्‌या हादी फुरमान।। ९५ ।।

जिस औरंगजेब बादशाह के पास बारह मोमिन पैगाम लेकर गए थे और काजियों की सलाह से वह डर गया था और फुरमान को ठुकरा दिया, इसलिए ही हुकम ने उसे सिंहासन से नीचे पटक दिया।

भरत खंड सुलतान कहावते, सो दिए सब फंदाए।
इन विध उरझे आपमें, सो किनहूं न निकस्यो जाए।। ९६ ।।

जो भारतवर्ष के शहंशाह कहलाते थे, वह अपने अहंकार के फंदे में ऐसे उलझ गए। उन्हें कोई निकाल नहीं सका।

उलट पलट दुनियां भई, तो भी देखत नाहीं कोए।
काढ़ ईमान कुफर दिया, ए जो सबे दुनी दीन दोए।। ९७ ।।

औरंगजेब बादशाह दिल्ली का सिंहासन छोड़कर जंगलों में भाग गया। फिर भी दुनियां नहीं देखती। उसका दुनियां और दीन दोनों जगहों से ईमान छीनकर उसे काफिर बना दिया।

हुकमें वेद कतेब में, लिखे लाखों निसान।
सो मिले कौल देखे तुम, हाए हाए अजूं न आवे ईमान।। ९८ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से वेद और कतेब में लाखों निशान लिखे हैं। वह सबके कहे अनुसार समय आ गया। हाय! हाय! मोमिनो, तुमको फिर भी ईमान नहीं आता।

Nijanand App

चाक चढ़ी सब दुनियां, आजूज माजूज हुए जोर।
सो तुम अजूं न देखत, एता पड़्या आलम में सोर।। ९९ ।।

सारी दुनियां माया के चक्कर में फंस गई है। दिन और रात उनकी आयु को समाप्त कर रहे हैं। सारे संसार में इतना शोर होने पर भी तुम अभी तक क्यों नहीं देखते हो?

हुकम ल्याया जो हकीकत, सो क्यों कर ना देख्या सहूर।
ल्याया तुमारे अर्स में, हुकम जबराईल जहूर।। १०० ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम जो जागृत बुद्धि के ज्ञान से तुम्हारे घर की हकीकत लाया है। तुम्हारे अर्श दिल में श्री राजजी महाराज का हुकम और जोश आया है।

सिजदा जित सरीयत का, तित आए लिखाई पुकार।
एते किन वास्ते लिखे, ए तुम अजहूं न किया विचार।। १०१ ।।

मक्का मदीने में जहां शरीयत के मानने वाले मुसलमान सिजदा बजाते हैं, वहां से वसीयतनामे लिखवाकर भिजवाए। यह किनके वास्ते भिजवाए? तुमने अभी तक इसका विचार नहीं किया।

किन लिखाए सखत सौगंद, जो सरीयत सामी बल।
तिन सबको किए सरमिंदे, हाए हाए अजूं याद न आवे असल।। १०२ ।।

शरीयत के बादशाह औरंगजेब के पास सौगंध खाकर यह शब्द किसने लिखवाए और फिर किसने सबको शर्मिन्दा किया? हाय! हाय! इतने पर भी तुम्हें अपने असल की याद नहीं आती।

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और अल्ला कलाम।
उठाए दुनी से जबराईल, ल्याया अपने मुकाम।। १०३ ।।

मक्का से बरकत, फकीरों की शफकत तथा कुरान को उठाकर जबराईल इमाम मेंहदी के पास ले आया।

महंमद मेंहेंदी ईसा अहमद, बड़ा मेला इसलाम।
जित सूर फूंक्या असराफीले, होसी चालीस सालों तमाम।। १०४ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ईसा अहमद श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आ गए हैं और निजानन्द सम्प्रदाय का बड़ा भारी मेला भर रहा है, जहां पर जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील कुलजम सरूप की वाणी का बिगुल बजा रहा है। ईसा रूह अल्लाह की बादशाही का यह काम चालीस वर्ष में पूरा हो जाएगा।

किन उठाए हिंदू ठौर सिजदे, किन मिलाए आखिर निसान।
किन खड़े किए मोमिन, कराए पूरन पेहेचान।। १०५ ।।

हिन्दुओं के सभी धर्म-स्थानों की महत्ता किस ने उठा दी और आखिर वक्त के निशान को किसने जाहिर किया? मोमिनों को पूरी पहचान कराकर खड़ा किसने किया?

ए झंडा किने खड़ा किया, ए जो हकीकी दीन।
ए लाखों लोक हिंदुअन के, इनको किनने दिया आकीन।। १०६ ।।

यह हकीकी दीन निजानन्द सम्प्रदाय का झंडा किसने खड़ा किया? लाखों हिन्दुओं को यकीन किसने दिलवाया?

Nijanand App

ए जो द्वार अर्स अजीम का, किन खोल्या कुंजी ल्याए।
इलम लदुन्नी मसी बिना, और काहू न खोल्या जाए।। १०७ ।।

परमधाम का दरवाजा किसने तारतम कुंजी लाकर खोला? श्री श्यामाजी महारानी के तारतम ज्ञान के बिना यह और किसी से खोला नहीं जा सकता था।

ए जो बुजरकी महंमद की, मेयराज हुआ इन पर।
महंमद साहेदी ईसे मेंहेंदी बिना, कोई दूजा देवे क्यों कर।। १०८ ।।

रसूल साहब की साहेबी, जिनको श्री राजजी महाराज का दर्शन हुआ, उनकी बातों की साहेदी को ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) और श्री प्राणनाथजी के बिना दूसरा कौन सत्य करके बताएगा।

उठे दीन सखत बखत में, पसर्‌या सबों में कुफर।
करें रूहें कुरबानी इन समें, ए क्यों होए रसूल रब बिगर।। १०९ ।।

ऐसे सख्त वक्त में जब संसार में सब जगह झूठ ही झूठ फैल गया, तो सभी धर्म समाप्त हो गए। इस समय मोमिन अपनी कुर्बानी देंगे। इसकी जानकारी आखिरी रसूल हकी सूरत श्री प्राणनाथजी के बिना किसको हो सकती है?

किन सुख देखाय अर्स के, बहु विध बिना हिसाब।
अनुभव अपना देख के, हाए हाए अजूं न उड़या ख्वाब।। ११० ।।

परमधाम के अखण्ड सुख बहुत तरीके के और बिना हिसाब के हैं। यह किसने दिखलाए। हाय! हाय! हे मोमिनो! यह अनुभव करके भी तुम्हारे सपने का तन अभी नहीं छूटता?

उतर आए कही रूहअल्ला, सुख सब अर्सों हकीकत।
पाई हक सूरत की अनुभव, दई निसबत मारफत।। १११ ।।

श्री श्यामाजी ने परमधाम से आकर क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की हकीकत बताई है। उन्होंने श्री राजजी महाराज के स्वरूप का अनुभव कराया और अपना मारफत का ज्ञान देकर अंगना होने की पहचान कराई।

बहु बिध भेज्या फुरमान, तिन में सब अर्सों न्यामत।
खिलवत वाहेदत सुध भई, और सुध दई कयामत।। ११२ ।।

फुरमान में कई तरह से निशान भेजे हैं, जिनमें सभी अर्शों की (क्षर, अक्षर, अक्षरातीत की) पहचान है, जिससे मूल-मिलावा की, एकदिली की और कयामत की पहचान हुई।

दोऊ हादियों दई साहेदी, मिलाए दिए निसान।
तो भी लज्जत ना पाई रूहों ने, हाए हाए जो एती भई पेहेचान।। ११३ ।।

रसूल साहब और श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने जो हकीकत के निशान बताए थे, उन दोनों के बताए हुए निशानों की पहचान करा दी है। हे रूहों, फिर भी तुमको इतनी पहचान आने पर भी हाय! हाय! तुम्हें लज्जत नहीं आई।

Nijanand App

हौज जोए की साहेदी, और जिमी बाग जानवर।
दई जुदी जुदी दोऊ साहेदी, तो भी दिल गल्या नहीं पत्थर।। ११४ ।।

हौज कौसर, जमुनाजी, परमधाम की जमीन, बगीचे, जानवरों की अलग-अलग गवाही रसूल साहब और श्री देवचन्द्रजी ने दी। फिर भी तुम इतने पत्थर दिल हो गए कि असर नहीं हुआ।

दोए अर्स कहे दोऊ हादियों, कही असों की मोहोलात।
कही अमरद और किसोर, ए अर्स सूरत हक जात।। ११५ ।।

अक्षरधाम, परमधाम की मोहोलातों की हकीकत रसूल साहब और श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने बताई। रसूल साहब ने पारब्रह्म के स्वरूप को मोमिनों के वास्ते अमरद कहा और श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने किशोर कहा।

भेज्या बेसक दारू हैयाती, तुम पे मेरे हाथ हबीब।
किए चौदे तबक मुरदे जीवते, तुम को ऐसे किए तबीब।। ११६ ।।

मैंने अपनी प्यारी श्यामा महारानी के हाथ अखण्ड कर देने वाली दवाई तारतम ज्ञान भेजा। जिससे तुम ऐसे वैद्य बन गए कि चौदह लोकों के मुर्दे जिन्दा होकर बहिश्तों में अखण्ड हो गए।

न थी हिंमत आप उठे की, सो तुम उठाए चौदे तबक।
ऐसा किया बैठ नासूत में, तुमें इनमें रही न सक।। ११७ ।।

तुम अपने आपको मुर्दा समझ रहे हो। तुमको ऐसी शक्ति दी कि चौदह तबकों के मुर्दे जीव खड़े हो गए। तुमने इतना बड़ा काम मृत्युलोक में बैठकर किया है। इतना होने पर भी तुम्हें दृढ़ता नहीं आई।

ऐसे बेसक होए के, तुमें अजूं न अर्स लज्जत।
एता मता ले दिल में, हाए हाए तुमें दरदा भी न आवत।। ११८ ।।

तुम ऐसे निस्संदेह होने पर भी परमधाम की लज्जत क्यों नहीं ले रहे हो? इतनी न्यामतें दिल में लेकर भी हाय! हाय! तुम्हें अभी तक परमधाम का दर्द क्यों नहीं आता?

हाए हाए ए देख्या बल जुलमत का, दिल ऐसा किया सखत।
ना तो एक साख मिलावते, अर्स अरवा तबहीं उड़त।। ११९ ।।

हाए! हाय! हमने निराकार की शक्ति को इतना बड़ा देखा, जिसने मोमिनों के दिल को कठोर कर दिया। वरना घर की जरा खबर मिलते ही रूहों का तन छूट जाता।

स्याबास तुमारी अरवाहों को, स्याबास हैड़े सखत।
स्याबास तुमारी बेसकी, स्याबास तुमारी निसबत।। १२० ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं, हे मेरी रूहो! तुम्हारी आत्मा को, तुम्हारे पत्थर दिल को तथा तुम्हारे ईमान को और परमधाम की अंगना होने के दावे पर मैं तुम्हें धन्य-धन्य कहता हूं।

धंन धंन तुमारे ईमान, धंन धंन तुमारें सहूर।
धंन धंन तुमारी अकलें, भले जागे कर जहूर।। १२१ ।।

धन्य-धन्य है तुम्हारे ईमान को, तुम्हारे ज्ञान को, तुम्हारी अक्ल को। धन्य-धन्य हैं जो जागृत बुद्धि के ज्ञान को लेकर ऐसे जागे हैं।

Nijanand App

अर्स बताए दिया तुमको, और बताए दई वाहेदत।
सहूर इलम कुंजी सब दई, बैठाए माहें खिलवत।। १२२ ।।

तुमको परमधाम बताया। मूल-मिलावा बताया। उनका विचार करने के लिए तारतम ज्ञान दिया। फिर तुम्हें मूल-मिलावा में जागृत कर बिठाया।

एता मता जिन दिया, तिन आप देखावत केती बेर।
पर तुमें राखत दोऊ के दरम्यान, ना तो क्यों रहे मोह अंधेर।। १२३ ।।

इतनी अधिक न्यामतें जिसने दी हैं, उसको तुम कितनी बार याद करते हो? हे मोमिनो! मैं तुम्हें दुनियां और परमधाम में रखे हूं, वरना यह अज्ञान का अंधेरा उड़ जाता।

बड़ाई तुमारी बका मिनें, निपट दई निहायत।
तुमें खुदा कर पूजसी, ऐसी और ना काहू सिफत।। १२४ ।।

तुम्हारी बुजरकी (महानता) अखण्ड परमधाम की है जो तुम्हें यहां दी है। सारी दुनियां तुम्हें खुदा करके पूजेगी। ऐसी महिमा किसी और की नहीं है।

ऐसी हुई न होसी कबहूं, जो तुम को दई साहेबी।
ए सुध अजूं तुमें ना परी, सुध आगूं तुमें होएगी।। १२५ ।।

मोमिनों जैसी साहेबी तुमको दी है। ऐसी न कभी हुई है न कभी होगी। अभी तुम्हें इसकी पहचान नहीं आ रही है। आगे इसकी पहचान आएगी।

तुम खेल में आए वास्ते, करी कायम जिमी आसमान।
तिन सब के खुदा तुमको किए, बीच सरभर लाहूत सुभान।। १२६ ।।

तुम्हारे खेल में आने के कारण ही जमीन और आसमान को अखण्ड किया है। परमधाम में श्री राजजी महाराज के समान दुनियां का खुदा तुमको बनाया है।

सो भी पूजें तुमारे अक्स को, तुम आए असल वतन।
तिन सबकी लज्जत तुमें आवसी, सब तले तुमारे इजन।। १२७ ।।

यह दुनियां वाले तुम्हारे अक्स (प्रतिबिम्ब) की पूजा करेंगे। तुम तो वापस परमधाम में आ जाओगे। फिर सारी दुनियां में तुम्हारा हुकम चलेगा, जिसकी साहेबी की लज्जत तुम्हें मिलेगी।

ए सब बातें ले दिल में, और दिलको लिख्या अर्स।
भिस्त करी तुम कायम, होसी तामें बड़ा तुमें जस।। १२८ ।।

इन सब बातों पर विचार करने के बाद ही मैंने तुम्हारे दिल को अर्श लिखा है। तुमने जो बहिश्तें कायम की हैं, उसमें तुम्हें बहुत यश मिलेगा।

तुम दई भिस्त बका ब्रह्मांड को, तिनमें जरा न सक।
किए नाबूद से आपसे, तो भी गुन जरा न देख्या हक।। १२९ ।।

तुमने ब्रह्माण्ड को बहिश्तों में अखण्ड किया है। इसमें जरा भी शक नहीं है। इस नाचीज दुनियां वालों को तुमने अपने जैसा अखण्ड बनाया। श्री राजजी महाराज के इस एहसान, मेहर को भी तुमने नहीं देखा।

Nijanand App

सो तुमें याद आवसी, ओ तुमें करसी याद।
तुमें पूजें जिमी बका मिने, अजूं इनका केता ल्योगे स्वाद।। १३० ।।

अब दुनियां की याद तुम्हें आएगी। दुनियां वाले तुम्हें याद करेंगे। तुम्हें अखण्ड जमीन बहिश्त में पूजेंगे। हे मोमिनो! कब तक झूठी दुनियां का स्वाद लेते रहोगे?

तुम मांगी है बुजरकी, तिनसे कोट गुनी दई।
दे साहेबी ऐसे अघाए, चाह चित्त में कहूं न रही।। १३१ ।।

तुमने साहेबी मांगी थी। मैंने उससे कोटि गुना दी। तुमको ऐसा तृप्त कर दिया कि तुम्हारे दिल में किसी तरह की चाहना बाकी नहीं रही।

क्यों देवें तुमको साहेबी, बीच जिमी फना मिने।
तिनसे तुमारी उमेदें, होएं न पूरन तिने।। १३२ ।।

संसार की इस झूठी जमीन में तुमको साहेबी क्यों दें? क्योंकि उनसे तुम्हारी कोई चाहना पूर्ण न होती।

तुम मांगी बीच ख्वाब के, जित आगे अकल चलत नाहें।
धनी देवें आप माफक, याकी सिफत न होए जुबांए।। १३३ ।।

तुमने संसार में साहेबी मांगी, जहां किसी की अक्ल चलती नहीं है। श्री राजजी महाराज अपने फुरमान से ही यह सब सुख तुम्हें दे रहे हैं। जिसकी सिफत यहां की जबान से नहीं हो पाती।

तुम आए तिन जिमीय में, जिनमें न काहूं सबर।
पेहेलें बिन मांगे दई तुमको, अब होसी सब खबर।। १३४ ।।

तुम ऐसी जमीन में आए हो, जहां किसी को सन्तोष नहीं है, इसलिए पहले से ही तुमको बिना मांगे ही साहेबी दी है। जिसकी अब पहचान हो जाएगी।

खेल देखाया तिन वास्ते, उपजे तुमको चाह।
ए खेल देख के मांगोगे, जानो होवें हम पातसाह।। १३५ ।।

खेल तुमको इस वास्ते दिखाया ताकि तुम्हारी चाहना बन जाए। खेल देखकर तुम्हारे दिल में भी इच्छा होगी कि दुनियां में हम भी बादशाह बनें।

सो कई पातसाही जिमी पर, करें पातसाही बीच नासूत।
कई तिन पर इंद्र ब्रह्मा फरिस्ते, तापर पातसाह माहें मलकूत।। १३६ ।।

मृत्युलोक में बड़े-बड़े बादशाह हुए हैं और उनके ऊपर इन्द्र, ब्रह्माजी और देवी-देवता हैं। उनके ऊपर भगवान विष्णु बादशाह हैं।

कई कोट मलकूत जात हैं, जबरूत के एक पलक।
ए सब पातसाही फना मिने, इनों का खुदा नूर हक।। १३७ ।।

अक्षरब्रह्म के एक पल में करोड़ों मलकूत (बैकुण्ठ) के शासन मिट जाते हैं। यह सब झूठे संसार के बादशाहों का बादशाह श्री राजजी महाराज का नूरी सत अंग अक्षर है।

Nijanand App

नूरजलाल आवे दीदारें, जो अपन बैठे माहें लाहूत।
तिन चाह्या देखों रूहों इस्क, तुमें तो देखाया नासूत।। १३८ ।।

हम जब परमधाम में बैठे होते हैं तो अक्षरब्रह्म प्रतिदिन दर्शन करने आते हैं। हे रूहो! उसने तुम्हारे इश्क को देखने की चाहना की थी, इसलिए तुमको मृत्युलोक में भेजकर अक्षर को दिखाया।

तुमें नासूत देख दिल उपज्या, करें पातसाही फना में हम।
मैं दई पातसाही बका मिने, सो अब देखोगे सब तुम।। १३९ ।।

तुमने मृत्युलोक देखकर संसार में बादशाह बनने की चाहना की, इसलिए मैंने तुमको अखण्ड बादशाही दे दी है, जिसे तुम अब देखोगे।

ए सुध तुमको ना हुती, तो तुम थोड़ा मांग्या निपट।
कोट गुना दिया तुमको, खोल देखो अंतर पट।। १४० ।।

पहले तुमको यह खबर नहीं थी, इसलिए तुमने थोड़ा मांगा था। अब तुम आत्मदृष्टि से देखो। मैंने तुम्हें करोड़ों गुना दिया है।

जैसी तुमारी साहेबी, करी मेहेर तिन माफक।
सुध हुए खुसाली होएसी, जो करी अपने मासूक हक।। १४१ ।।

मैंने जितनी बड़ी तुम्हारी साहेबी देखी उतनी बड़ी मेहर की। इसकी सुध होने पर तुम्हें खुशी होगी। जो कृपा श्री राजजी ने हमारे ऊपर की है।

देखो अचरज महामत मोमिनों, जो बेसक हुए हो तुम।
तुमें किन दई एती बुजरकी, दिल अर्स कर बैठे खसम।। १४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! एक बड़ी हैरानी वाली बात देखो कि तुम्हारे संशय मिट गए हैं और तुम्हें इतनी बड़ी साहेबी किसने दी? वह धनी श्री राजजी महाराज तुम्हारे दिल में अर्श कर बैठे हैं।

॥ प्रकरण ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ २२११ ॥

॥ प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ॥

॥ प्रकरण ॥ ४६८ ॥ चौपाई ॥ १६३७६ ॥

॥ सिनगार सम्पूर्ण ॥

Nijanand App